RS = 46

श्री नटराज प्रकाशन

ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली-110053

हिन्दी उपन्यास

(कर्मभूमि, सुनीता, दिव्या, आपका बंटी)

डॉ. हेमलता

डा. चित्रा सचदेव

Bhatia Book Depot
8, Krishna Mkt., Kalkaji, N.D.-19
Opp. Desh Bandhu College
School, College, Engg., B.B.A.,
& All type Competition Books & Stationery
Mob.: 9810036358, 2017

श्री नटराज प्रकाशन

दिल्ली-110053

आपका बंटी का तात्त्विक समीक्षा

उपन्यास गद्य सर्वाधिक लोकप्रिय, सशक्त एवं चर्चित विधा है। इसमें मानवीय जीवन का महाकाव्यात्मक चित्रण होता है। इसमें समाज, परिवेश देश एवं वैश्विक परिदृश्य को देखा जा सकता है। यह अतीत और वर्तमान के कलेवर को सम्पूर्णता में समा सकता है। समाज में होनेवाले परिवर्तन अपनी व्यापकता में इसमें दिखाई देते हैं। यही कारण है कि रॉल्फ फॉक्स ने उपन्यास को मानव जीवन का गद्य कहा है और इसमें मानव जीवन को समग्रता में समझने का प्रयास होता है।

आपका बंटी भी एक ऐसा ही उपन्यास है जिसमें मानवीय जीवन को समझाने का प्रयास किया गया है। साठोत्तरी भारतीय समाज एवं मानसिकता में आनेवाले परिवर्तनों को उकेरा गया है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश में तीव्रता से परिवर्तन आया है। व्यक्तिवाद की उद्भावना से जीवन में विरूपता, विसंगतियाँ उत्पन्न होने लगी थी। इस साठोत्तरी रचनाकारों ने अपने-साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसे नेमिचन्द्र जैन के शब्दों में समझा जा सकता है—"पिछले दस-पंद्रह वर्षों में हिंदी उपन्यास अपनी सार्थकता के लिए कई नए परिप्रेक्ष्य खोजता रहा है और अब उसमें व्यक्ति के आंतरिक सत्य का बाह्य परिवेश के साथ समंजन, रोमान्टिक दृष्टि के बजाय जीवन के यथार्थ साक्षात्कार-का प्रयास, भावुकता या भाव-प्रधानता के स्थान पर तीखापन, कलात्मक संयम और निर्ममता आदि विशेषताएं क्रमशः अधिकाधिक दिखने लगी है। अब उपन्यासकार प्रायः यह प्रयत्न करता है कि गहन से गहन अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए भी साधारण जीवन के यथासंभव सहज और दैनन्दिन पक्षों का ही सहारा हो बल्कि शायद उसे यह अनुभव होता है कि गहनतम सत्य और उसकी अनुभूति साधारण जीवन में ही अधिक संभव है।"

संभवतः यही कारण है कि आधुनिक मानवीय रिश्तों की जटिलताओं और विडंवनाओं को रूपायित करने के लिए आज का रचनाकार अनुभव के व्यापक धरातल से गुजरता है अपनी अनुभूति की प्रामाणिकता के लिए निजी जीवन की कथा से परहेज नहीं करता है।

सन् 1960 के बाद हिंदी उपन्यास में स्त्री-पुरुष के संबंधों पर विभिन्न कोणों से दृष्टिपात किया गया। संबंधों के बदलते यथार्थ कई रूपों में इसमें अभिव्यंजित हुआ है। व्यक्तिवाद से निर्मित स्वकेन्द्रित मानसिकता ने स्त्री-पुरुष की अहं भावना को पुष्ट किया है। इसके फलस्वरूप दाम्पत्य जीवन में दरार उत्पन्न होने लगी है और परिवार विघटित हो रहे हैं। नारी की विडंबना भी यहाँ लक्षित हुई । वह नारी आधुनिक सम्पन्न शिक्षित है एवं मच्योर है। तदपुरान्त भी उसके संबंधों में सहजता नहीं है बल्कि टूटन एवं विखराव है। इससे उसके जीवन में जटिलताएं बढ़ी हैं। संबंधों में निरंतर खोखलापन बढ़ता जा रहा है। दाम्पत्य जीवन की विघटनकारी स्थितियों का प्रभाव उसके बच्चों के जीवन को नारकीय बना रहा है। इसका उदाहरण मन्नूभण्डारी का उपन्यास 'आपका बंटी' है जो आधुनिक दाम्पत्य जीवन और नारी की विडम्बनाओं और विद्रुपता को चित्रित करता है।

'आपका बंटी' उपन्यास की मूल समस्या पति-पत्नी का अहं भाव का अधिक्य है। इसकी मूल कथा में सुशिक्षित एवं आधुनिक दम्पति-अजय एवं शकुन हैं। उनके अहं के पारस्परिक टकराव तथा तनाव से पैदा हुई स्थितियों से उनका दाम्पत्य जीवन नीरस तथा दुःखद हो जाता है। वकील चाचा के प्रयत्नों के बाद भी यह संबंध जुड़ नहीं पाता। अजय तथा शकुन का तलाक हो जाता है। अजय के पुनर्विवाह कर लेने के बाद शकुन भी डॉ. जोशी से विवाह कर लेती है। इस घटना चक्र के मध्य 'बंटी' को मानसिक यंत्रणा झेलनी पड़ती है। मन्नू भण्डारी के शब्दों में इस पूरी स्थिति की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि "इन संबंधों के लिए सबसें कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस ट्रेजडी के त्रास को सबसे अधिक भोगता है। शकुन-अजय के संबंधों का तनाव और चटख बंटी की नस-नस में ही प्रतिध्वनित होती है।" वह अपनी माँ शकुन को खुश रखने के लिए असमय ही समझदार बन जाता है। उपन्यास के अंत तक आते-आते वह अंतुर्मुखी, आत्मेन्द्रित और अति संवेदनशील बन जाता है। जो उसे 'प्रॉब्लम चाइल्ड' में परिवर्तित कर देता है। जहाँ उसे कुछ भी समझ नहीं आता। उसके लिए सब कुछ अस्पष्ट हो जाता है। जिसे लेखिका ने उपन्यास के अन्त में अभिव्यक्त करते हुए लिखा है—"पता नहीं कैसे क्या हुआ कि उसके भीतर दो आँखें और उग आई और उसके बाद से ही सब कुछ गड़बड़ हो गया। बाहर की आँखों से वह एक चीज देखता है तो भीतर की आँखें दूसरी चीज देखने लगती है। कभी भीतर की चीजें बाहर की चीजों को दबोच लेती हैं तो कभी बाहर की भीतर की चीजों को। कभी-कभी दोनों एक-दूसरी में ऐसी गड़मड हो जाती हैं कि फिर तो कुछ भी समझ में नहीं आता। बस, सब कुछ गोल-गोल अण्डा।"

निश्चय ही उपन्यास की कथा बंटी के चारों ओर घूमती है किन्तु फिर भी, यह निर्णय करने में कठिनाई होती है कि हमारी संवेदना का हकदार बंटी है या शकुन। क्योंकि शकुन भी उपन्यास में मानसिक यंत्रणा झेलती है जितना बंटी झेलता है। फिर भी पाठक की संवेदना की धुरी बंटी पर ही केन्द्रित होती है क्योंकि इसलिए कि स्वयं मन्नू भण्डारी ने उपन्यास के आरंभ में 'जन्म पत्री : बेटी की' शीर्षक में स्वीकार किया है कि 'शकुन-अजय के आपसी संबंधों में बंटी चाहे कितना ही फालतू और अवांछनीय हो गया हो, परंतु मेरी दृष्टि को सबसे अधिक उसी ने आकर्षित किया।.....जीते जागते बंटी का तिल-तिल कर के समाज की एक बेनाम इकाई-भर बनते चले जाना यदि पाठक को सिर्फ अश्रुविगलित ही करता है तो मैं समझूँगी कि यह पत्र सही पतों पर नहीं पहुँचा है।"

उपन्यास का प्रारंभ मम्मी के ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठकर तैयार होने से होता है। शकुन कॉलेज की प्रिंसिपल है। वह शिक्षित एवं आत्मनिर्भर महिला है। परंतु बंटी को अपनी मम्मी का इस तरह होना अच्छा नहीं लगता। उसे लगता है कि ड्रेसिंग टेबल की रंग बिरंगी शीशियों में छोटी-बड़ी डिब्बियों में जरूर कोई जादू है कि मम्मी इन सबको लगाने के बाद एकदम बदल जाती है। कम से कम बंटी को ऐसा ही लगता है कि उसकी मम्मी अब उसकी नहीं रही कोई और ही हो गई।

मम्मी के कॉलेज जाने पर बंटी फूफी के साथ रहता है। तो छुट्टी के दिन वह अपने दोस्त टीटू के घर खेलने जाता है। वहीं उसे पता चलता है कि उसके मम्मी-पापा का तलाक हो गया है। अबोध बंटी जानना चाहता है कि मम्मी-पापा का तलाक क्यों होता है? वह मम्मी से पापा वाली बात करना चाहता है। उसके मम्मी पापा साथ क्यों नहीं रहते। उनकी क्या लड़ाई है। वह सोचता है कि "क्या इतने बड़े लोग भी लड़ते है? ऐसी लड़ाई जिसमें कभी दोस्ती ही न हो। मम्मी को क्या कभी पापा की याद नहीं आती? वह तो टीटू या कुन्ती से अगर लड़ाई कर लेता है तो दो-तीन दिन तो बिना बोले रह लेता है। अकेला-अकेला खेलता रहता है, पर उसके बाद तो ऐसा जी घबराने लगता है कि बोले बिना रहा नहीं जाता। कुछ न कुछ बहाना निकालकर फिर दोस्ती कर लेता है।" अजय और शकुन की लड़ाई की आंच बंटी पर पड़ती है। मम्मी उसे कभी अपनी लड़ाई का हथियार समझती है, "बंटी केवल उसका बेटा ही नहीं है बल्कि वह हथियार भी है, जिससे वह अजय को टॉरचर कर सकती है, करेगी।" तो कभी उसे अपना सहारा मानती है। सोने से पहले मम्मी उसे रोज कहानी सुनाती है....राजा रानी की, परियों की। ऐसे-ऐसे राजकुमारों की जो अपनी माँ को बहुत प्यार करते थे और जो अपनी माँ के लिए बड़े-बड़े समुद्र तैर गये थे और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ पार कर गये थे। फिर मम्मी उसके गाल सहलाते हुए

पूछती—"अच्छा, बता तू मेरे लिए इतना सब करेगा बड़ा होकर या कि निकाल बाहर करेगा....हटाओ बुढ़िया को, बोर करती है।" मम्मी बंटी को अपने प्रति समर्पित करने के लिए ऐसी कहानियाँ सुनाती है। ताकि उसका मन पापा के लिए लालयित न हो। बालमन मम्मी के प्रति संकल्प करता है कि वह कभी भी ममी को नही छोड़ेगा। परंतु पापा की याद आने पर वह मम्मी की खुशी के लिए, उसे नकार देता है। इस तरह बंटी मम्मी की खातिर बालक से बड़ा बनने लगता है। अजय से तलाक के बाद जब शकुन डॉ. जोशी से जुड़ने लगती है तो प्रारंभ में बंटी अपना विरोध प्रकट करता है लेकिन शकुन के समझाने पर वह मम्मी की खुशी के लिए यह रिश्ता स्वीकार कर लेता है। परंतु डॉ. जोशी के घर की स्थितियां देखकर उसका बालमन विद्रोह कर देता है। यहीं से उसके जीवन की त्रासदी शुरू हो जाती है। मम्मी के साथ 'एडजस्ट' में 'प्रॉबल्म' होती है तो मम्मी उसे अपने पिता के पास भेज देती है। वह सोचती है कि बंटी यदि उसके और अजय के बीच सेतु नहीं बन सका तो वह उसे अपने और डॉक्टर के बीच बाधा भी नहीं बनने देगी। "यदि बंटी को दरार बनना है तो मीरा और अजय के बीच बने।"

बंटी अपने पापा के साथ कलकत्ता चला जाता है किन्तु आखिर तक उसके मन में यह इच्छा दबी रहती है कि मम्मी उसे रोक ले, लेकिन ऐसा नही होता। कलकत्ता पहुँचकर पापा के घर में भी नई मम्मी और भाई के कारण उसका सारा उत्साह खत्म हो जाता है। उसका भ्रम टूट जाता है कि वह अपने पापा के साथ रहेगा, उनके साथ घूमेगा, रोज नये खिलौने लेगा। वह मीरा को मम्मी के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता जिस तरह डॉ. जोशी को पापा के रूप में अपना नहीं पाता। पापा के पास आकर भी वह अकेला हो जाता है। मीरा बंटी के लिए 'वे' ही रहती है। मीरा के साथ बंटी 'एडजस्ट' न कर पाने के कारण अजय उसे हॉस्टल भेजने का निश्यच करता है। हॉस्टल जाने की बात उसे एकाकी बना देती है। डॉ. जोशी और मम्मी के घर में असंगत होने के बाद वह अब अजय और मीरा के परिवार में अनचाहा महसूस करता है। आखिर में हरदम चहकने वाला बंटी एकदम गुमसुम, उदास, असहाय और विक्षिप्त बंटी बन जाता है।

वस्तुतः 'आपका बंटी' एक 7-8 वर्ष के बालक की कथा है जो माता-पिता के अहं के टकराव में पिसकर अपना बचपन खो देता है। दुनिया की भीड़ में, अपने ही परिवार में स्वयं को अनचाहा, फालतू तथा तीसरा बच्चा मानने लगता है। वह मम्मी पापा दोनों का प्यार पाना चाहता है, किंतु जब मम्मी होती है तो पापा नहीं और जब पापा का प्यार मिलता है तो मम्मी का नहीं। उसकी यह आकांक्षा अजय और शकुन के अहं की बलि चढ़ जाती है। वह कहीं भी 'एडजस्ट' नहीं हो पाता और फलस्वरूप दोनों के रहते हुए भी उसे न चाहते हुए भी हॉस्टल जाना पड़ता है।

आपका बंटी का कथासार

संवेदना शब्द सामान्यतः सहानुभूति का अर्थबोधक है। यह मन में होने वाला अनुभव या बोध है किसी को कष्ट में देखकर जिस दुःख की अनुभूति मन में होती है वही संवेदना है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार- "संवेदना हमारे मन की चेतना की वह कुटस्थ अवस्था है जिसमें विश्व की वस्तु विशेष का बोध ने होकर उसके गुणों का बोध होता है।"

सामान्यतः संवेदना का विकास आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृति परिस्थितियों के आधार पर होता है जो रचनाकार की संवेदननाशीलता का अंग बनता है। इस कारण वह अपनी समकालीन परिस्थितियों से सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक प्रभाव करती है जिसे वह नये रूप रंग के साथ अपनी कृतियों में प्रस्तुत करता है।

'आपका बंटी' मन्नू भण्डारी का मौलिक एवं विशिष्ट उपन्यास है। कथानक, प्रस्तुतीकरण, रचनातंत्र, समस्या और उसके यथार्थ, लेखिका की ईमानदारी आदि इसे उपन्यास जगत में एक अलग पहचान देने में समर्थ है। शायद हिंदी साहित्य जगत का यह प्रथम उपन्यास है जिसमें एक 7-8 वर्षीय बालक के भाव विकास का अध्ययन किया गया है। श्री अरविन्द जैन ने इस उपन्यास को 1970 के बाद प्रकाशित साहित्य में सबसे चर्चित उपन्यास कहा है, ना केवल हिंदी में ही बल्कि अन्य सभी भारतीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्यिक कृतियों में भी, जो सबसे अधिक प्रकाशित, अनूदित और चर्चित हुआ। माता-पिता के आपसी अहं एवं उससे उत्पन्न समस्याओं के बीच पिसती हुई संतान को जिस मानसिक विकारों एवं ग्रन्थियों का शिकार होना पड़ता है। उनको अनावरण करते हुए लेखिका ने गृहस्थ जीवन के मंत्र करने की ओर बढ़ते दम्पतियों को सतर्क करने का सार्थक प्रयास किया है।

अरविन्द जैन के शब्दों में "यह उपन्यास मध्यवर्गीय भारतीय समाज की दिनोदिन बढ़ती हुइ एक ऐसी समस्या का समाजशास्त्रीय विश्लेषण है जिसका कोई हल नहीं दिखाई देता है।" वस्तुस्थिति यह है कि बालक वर्तमान समय में एक

साधारण घटना हो गई है। पति-पत्नी के लिए आपसी कटु एवं तनावपूर्ण असहज सम्बंधों से मुक्ति का एक मात्र हल तलाक हो सकता है किन्तु समस्या वहाँ उत्पन्न होती है जब उनके सन्तान हो, तब तलाक पत्नी एवं संतान के लिए मुक्ति न होकर एक यातना बन जाती है। भारतीय समाज में एक ओर पति तो पुनर्विवाह कर के अपने नये पारिवारिक जीवन में मग्न हो जाता है, दूसरी ओर तलाक के बाद पत्नी पुनर्विवाह करती है तो उस समय संतान की स्थिति दयनीय बन जाती है। इसी स्थिति पर पहलीबार प्रस्तुत उपन्यास में विस्तार से अवलोकन किया गया है। इ संदर्भ में डॉ. मनमोहन सिंह सहगल के विचार उल्लेखनीय है- "संतानवान माता-पिता का तलाक तथा उस पर पुनर्विवाह जीवन का कितना बड़ा आघात बन सकता है। इस पर पहली बार ध्यान आकर्षित किया गया है।"

(क) एकल परिवार की संरचना

परिवार के स्तर पर शकुन और अजय का परिवार एकल परिवार है। दोनों ही शिक्षित तथा आधुनिकता से युक्त है। यह परिवार उच्च मध्यवर्ग से संबंध रखता है जिसमें पति-पत्नी दोनों ही परिवार की अर्थव्यवस्था में सहभागिता निभाते हैं। शकुन कॉलेज में विभागाध्यक्ष है और अजय डिविजनल मैनेजर। दोनों के अर्थोपार्जन के कारण परिवार आर्थिक रूप से सुहृद है। किन्तु उनका दाम्पत्य जीवन असहज है। इसका प्रभाव उसके पारिवारिक जीवन पर भी पड़ता है जो विघटन के कगार पर पहुँच जाता है। दोनों ही अपने-अपने अहं के कारण एक दूसरे को समझने की कोशिश नहीं करते और न ही आपस में कोई समझौता कर पाते हैं। वैसे शकुन काफी हद तक समझौते करने की कोशिश करती है। इसके फलस्वरूप भी वह अपने वैवाहिक जीवन को बिखरने से तीन वर्ष तक ही सफल हो पाती है।

वास्तव में एक पक्षीय समझौते से परिवार रूपी गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती। इसे आगे बढ़ने के लिए पति-पत्नी दोनों के ही सहयोग की आवश्यकता होती है। शकुन जहाँ परिवार को बचाने का प्रयास करती है वही अजय अपनी तरफ से कोई सहयोग नहीं करता। वैसे उन दोनों का अहं ही उनको आपसी समझौते से रोकता है। शकुन यह जानते हुए कि अजय बहुत 'ईगोस्ट' और 'पजैसिव' है, उसे पूर्वतः विनम्र होकर ही अपना बनाया जा सकता है, अपने अहं के मद में अपने 'स्व' की पूर्ण आहूति नहीं दे पाती। फलतः धीरे-धीरे उनके परिवार में तनाव आने लगता है जिससे वे दोनों एक दूसरे से विलग हो जाते हैं। दोनों वैवाहिक संबंध को निभाने का अभिनय करते हैं कभी विनम्र होकर तो कभी थोड़ा पिघलकर। वास्तविकता यह है कि- "समझौते का प्रयत्न तो दोनों में एक अण्डर स्टैंडिग पैदा करने की इच्छा

से नहीं होता था। वरन एक दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से। तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठण्डी लाशों की तरह लेटे-लेटे दूसरे को बेचैन और छटपटाते देखने की आकांक्षा में रातें, भीतर ही भीतर चलने वाली अजीब लड़ाई थी, वह भी।" अपने-अपने अहं में योद्धाओं की भांति डटे दोनों सहज नहीं हो पाते। अहं की यह प्रवृति किसी न किसी मात्रा में सभी व्यक्तियों में विद्यमान रहती है। चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। परिस्थितियाँ तथा परिवेश इस अहं भाव को बराबर प्रभावित करते हैं। अहं भाव स्वाभिमान के स्तर तक तो उचित हैं लेकिन जैसे ही वह दम्भ की श्रेणी में आता है तो वह बुराई में परिवर्तित होने लगता है। यही कारण है कि शकुन का अहं जब अहंकार में तथा अजय का अहं दम्भ में परिणत हो जाता है तो उसका प्रभाव उनके दाम्पत्य जीवन पर पड़ने लगता है। उनका दाम्पत्य जीवन विशृंखलित हो जाता है। अजय और शकुन का संघर्ष मानसिक स्तर पर है। जो उनके अहं के टकराहट के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। इससे उनके मध्य वैमनस्य की खाई गहराती जाती है।

अजय अपनी सामन्ती मानसिकता के कारण शकुन के अहंभाव को सहन नहीं कर पाता है। यह हमारे भारतीय समाज की विडम्बना ही है कि स्त्री जहाँ मानसिक स्तर पर आधुनिक विचारोंयुक्त होती जा रही है, वहीं आज भी अधिकांश पुरुष सामन्ती मानसिकता को पुरुषत्व की निशानी मानते हैं। इसीलिए जिन परिवारों में आधुनिक विचारों की पत्नी तथा सामन्ती मानसिकता युक्त पति अपने दुराग्रहों में कैद रहेंगे, वहाँ परिवार के विघटन की सम्भावना रहती है। अन्यथा दोनों में से एक को अपने अस्तित्व को विनष्ट कर आपसी समझौते द्वारा परिवार को विघटन से बचाना पड़ता है। यह भारतीय समाज की विद्रुपता है कि आज भी पत्नी को ही आपसी समझौते के लिए पहल करनी पड़ती है तथा अपने अस्तित्व को भूलकर पति के अनुकूल 'एडजस्ट' करना पड़ता है। शकुन ऐसा नहीं कर पाती है, तो अजय उससे विलग हो जाता है।

शकुन तथा अजय का परिवार एकल परिवार है। दोनों ही शिक्षित तथा आधुनिक जीवन शैली युक्त उच्च मध्यवर्गीय परिवार के अंग हैं। उनका दाम्पत्य जीवन असहज है। इनके असहज-तनावपूर्ण संबंध का प्रभाव उनके पुत्र बंटी पर पड़ता है। शकुन अपने तनावपूर्ण दाम्पत्य जीवन को बचाने के लिए काफी हद तक समझौते करने की कोशिश करती है। उसका एक तरफा प्रयास इस परिवार को टूटने से बचाने में सिर्फ तीन वर्ष तक ही सफल हो पाता है।

अजय अपने पुरुषत्व के दम्भ के कारण शकुन को बराबरी का दर्जा नहीं दे पाता। यह हमारे भारतीय समाज का दोहरापन है कि उसे पत्नी मॉड शिक्षित तथा

कमाऊ व परम्परागत संस्कारवान दोनों का सम्मिश्रण चाहिए। ताकि वह पति के सामने विनम्र भारतीय पत्नी बनी रहे। जबकि शकुन ऐसी नहीं बन पाती। वह अपने अस्तित्व को पति के अस्तित्व में विलीन नहीं कर पाती। इसी कारण उसे अजय को खोना पड़ता है। दोनों में आपसी तालमेल के अभाव में उनका परिवार तनावपूर्ण हो जाता है। महानगरीय जीवन में अंतरंग संबंधों में आती यांत्रिकता और जटिलता से इनका परिवार आक्रांत है।

दूसरा परिवार अजय और मीरा का है जहाँ मीरा अपना अहं नष्ट कर देती है तो उनका परिवार सुखी एवं शांतगति से आगे बढ़ता है इसी भांति शकुन एवं डॉ. जोशी की पारिवारिक स्थिति है। यहां शकुन का अहं डॉ. जोशी से टकराता नहीं है। दोनों के आपसी तालमेल से परिवार शान्तिपूर्ण एवं स्थिर रहता है।

इस प्रकार आपसी तालमेल, विवेकशीलता से ही परिवार संस्था को सहज रूप से आगे बढ़ाया जा सकता है। परिवार को विघटन से बचाने के लिए पति-पत्नी दोनों समझौते करते हैं तभी यह संस्था अस्तित्व में रह सकती है।

स्वतंत्रता के पश्चात् अर्थात् 1950 के बाद भारतीय समाज में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्तर पर संविधान, कानून-व्यवस्था, शिक्षा और जनचेतना के कारण व्यक्तिगत संबंधों और परम्परागत विवाह संस्था के स्वरूप, स्वभाव और स्थितियों में निरन्तर परिवर्तन हुआ है। शहरीकरण, औद्योगिकरण और आर्थिक दवाबों की वजह से संयुक्त परिवारों के टूटने-बिखरने की सामाजिक प्रक्रिया अधिक तेज हुई। इसी के साथ नवीन शिक्षा व्यवस्था एवं यातायात के विस्तार से बौद्धिक शक्ति का विकास हुआ तो औद्योगिकीकरण ने पूजीवादी व्यवस्था को जन्म दिया। इनसे जीवन में यांत्रिकता का आगमन हुआ। औद्योगिकीकरण ने व्यक्ति के जीवन को सुविधा सम्पन्न बनाया, लेकिन इसके प्रभाव से मानवीय संबंध अर्थ प्रधान होने लगे। इस भावना के कारण सहयोग एवं सहानुभूति की भावना समाप्त होने लगी जिससे मनुष्य में पाशविकता प्रबल होती गई। मानव में न तो यथार्थ को पहचानने की शक्ति रही और न ही आत्मान्वेषण का सामर्थ्य।

इसके उपरांत छठे दशक में हमारे समाज के मूल्यों में नैतिकता के मानदण्डों में गुणात्मक परिवर्तन हुआ। इस दशक में स्त्री-पुरुषों के संबंधों ने भी नया रूप लिया। इसका प्रभाव पारिवारिक संरचना पर भी पड़ा। पहले भी हमारे पारिवारिक संस्था में पति-पत्नी के संबंधों में तनाव एवं समस्याएं थीं किन्तु इसके बावजूद पारिवारिक रिश्तों में आत्मीयता बरकरार रहती थी जो परिवार को विघटित होने से बचाए रखती थी। किन्तु स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की यांत्रिक जीवन शैली ने पति-पत्नी के आत्मीय संबंधों में यांत्रिकता एवं बौद्धिकता का प्राधान्य हो गया। आपसी सामंजस्य के अभाव में संयुक्त परिवार विघटित होने लगे एवं एकल परिवारों का उदय हुआ।

(ख) वैवाहिक स्थिति

हिन्दू धर्म में विवाह मूलतः व्यक्ति के धार्मिक एवं सामाजिक कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिए तथा पारिवारिक कल्याण के निमित्त सम्पन्न होने वाला एक पवित्र संस्कार माना जाता है। स्वातंत्र्योत्तर परिवर्तित परिस्थितियों में अब विवाह एक संस्कार नहीं एक सामाजिक अनुबंध के रूप में देखा जाने लगा है जिसमें व्यक्ति मुख्यतः व्यक्तिगत हित एवं सुख-सुविधाओं के लिए संगठित होते हैं। विवाह समाज की मूलभूत संस्था है इसकी आधार शिला पर ही परिवार का निर्माण होता है। यह वह सूत्र है जिसमें बंधकर एक दम्पति एक परिवार का निर्माण करता है। भारतीय संस्कृति में इसे एक पुनीत एवं महत्वपूर्ण धार्मिक संस्कार माना गया है, जबकि पाश्चात्य संस्कृति में विवाह पति-पत्नी क मध्य एक सामाजिक एवं नैतिक समझौता माना गया है।

विवाह से पूर्व स्त्री-पुरुष अपना अलग-अलग अस्तित्व रखते है, किन्तु विवाह सूत्र में बंध जाने पर दोनों का सामाजिक संबंध तो स्थापित होता है साथ ही दोनों समाज में आदर के पात्र भी बनते हैं। विवाह मात्र सामाजिक कारणों से ही आवश्यक नहीं है अपितु व्यक्ति की भावानात्मक एवं दैहिक आवश्यकता की पूर्ति भी इससे होती है। अतः विवाह समाज की अनिवार्यता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध ही नहीं है, बल्कि दो परिवारों का संबंध भी माना जाता है।

विवाह का मूल उद्देश्य स्त्री पुरुष को दाम्पत्य सूत्र में बांधकर नवजीवन प्रारम्भ करने की प्रेरणा देना है। इस नवजीवन में पुरुष गृहपति और स्त्री गृहस्वामिनी बनकर अपने वैवाहिक जीवन को संयुक्त रूप से आरंभ करते हैं। भारतीय संस्कृति में धर्म और जीवन-दर्शन के अनुसार दम्पति परिवार और समाज का वह आदर्श रूप है जिसमें दोनो धर्म, अर्थ, काम को भोगते हुए मोक्ष की प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं। पारिवारिक निष्ठा और धर्माचार ही दोनों का इष्ट होता है। अखण्ड दाम्पत्य ही भारतीय संस्कृति की विशिष्ट उपलब्धि है।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय विवाह संस्कार का स्वरूप परिवर्तित हुआ है। अब विवाह ने लगभग सामाजिक समझौते का रूप धारण कर लिया है। बदलते परिवेश के साथ स्त्री ने घर की चारदीवारी को छोड़कर बाहरी दुनिया में कदम रखा तो उसका एक नितान्त भिन्न रूप उभरकर सामने आया। जहाँ उसने अपने परंपरागत 'अबला' रूप त्यागकर स्वाभिमानी, स्वाबलम्बी 'सबला' रूप में नया अवतार लिया। इस स्थिति में पुरुष की सर्वोच्चसत्ता और सर्वाधिकरों पर प्रश्नचिन्ह लग गये। इसका सीधा प्रभाव उनके दाम्पत्य संबंधों में झलकने लगा। फलस्वरूप इनका दाम्पत्य जीवन तनावपूर्ण होने लगा। क्योंकि एक ओर पति-पत्नी परंपरागत

विश्वासों तथा मूल्यों को नहीं त्यागना चाहते, दूसरी ओर आधुनिकता नवीन मूल्य तथा स्वतंत्रता उन्हें एक नया दृष्टिकोण प्रदान कर रही थी। इस संक्रमण शील परिस्थिति में जहाँ पत्नी स्वाभिमानी एवं आधुनिक हो रही थी वही पति अपनी सामान्ती-पितृसत्तात्मक मानसिकता के साथ दोहरा जीवन जी रहे है। वास्तव में, स्वतंत्रता के बाद बड़ी तेजी से स्त्री-पुरुषों के संबंधों में नया मोड़ आया। इससे आज विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान न होकर स्त्री-पुरुष में बराबरी के स्तर पर होने वाला समझौता बन गया है। इसके फलस्वरूप दाम्पत्य जीवन में तनाव मनमुटाव, कलह• वैमनस्य होना आमबात होने लगी है।

शकुन और अजय दोनों को ही अपना विवाह गलत निर्णय लगता है। वह बार-बार अपने विवाह को लेकर विचार करती रहती है। शुरू के दिनों में ही एक गलत निर्णय ले डालने का एहसास दोनों के मन में साफ होकर उभर आया था। इसकी बजह से वे दोनों कभी भी सहज होकर एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार नहीं पाते। शकुन की आधुनिकता अजय को आस्वीकार्य होने लगती है तो अजय का अहं जन्य दम्भ शकुन के लिए असहनीय भारतीय समाज व्यवस्था पुरुष सत्तात्मक होने के कारण स्त्री-पुरुष दोनों के लिए नैतिकता के मानदण्ड अलग-अलग रहे हैं। यहां आज भी पुरुष स्वयं को स्त्री से सामाजिक एवं शारीरिक दृष्टि से श्रेष्ठ एवं उच्च समझता है। इसी दृष्टिकोण के कारण उसमें अहं भावना जन्मगत होती है। जो आगे चलकर दम्भी रूपी दुगुर्ण का रूप धारण कर लेती है। अजय भी इसी दुर्गण से ग्रासित है। इसी कारण वह शकुन के दबंग व्यक्तित्व को सहज रूप में स्वीकार नहीं कर पाता। वह अपनी हीनता बोध को छिपाने के लिए असहयोगपूर्ण रवैया अपनाता है।

शकुन का स्वतंत्र व्यक्तित्व पति अजय से तनावपूर्ण एवं टकराता रहता है उसकी यातना अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व और पति के साथ संबंधों के बीच जूझते हुए तनावपूर्ण एवं विषम हो जाने की यातना है। यह आधुनिक नारी के जीवन की त्रासदी है। उसके इसी स्वतंत्र व्यक्तित्व और उसके इस एहसास एवं बोध के कारण अजय उसके साथ अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट नहीं हो पाता। शकुन समझ नहीं पाती कि उसकी क्या गलती है। और अजय उससे क्या चाहता है- "सब लोग केवल उससे चाहते ही है और वह उनकी चाहनाओं को पूरती रहे।" अंततः वे रोज-रोज के कलह और तनाव से बचने के लिए विवाह के तीन साल संग रहकर संबंध विच्छेद कर लेते हैं।

इस प्रकार अजय और शकुन का विवाह 'अनमेल विवाह' के रूप में उभर कर आया है। यह परंपरागत रूप में 'अनमेल विवाह' न होकर नवीन स्वरूप लेकर आया है जिसमें पति-पत्नी शारीरिक रूप से अनमेल या असमान नहीं हैं। यहां असमानता

का स्तर उम्र का नहीं है बल्कि यहां मानसिक असमानता है। यही उनके वैवाहिक जीवन में दरार डालती है। क्योंकि शकुन जैसी स्वतंत्र, दबंग आधुनिक स्त्रियों के लिए स्त्री पुरुष संबंधों की ऐसी संस्था की मांग करती है जो उसकी यातना और समस्या का मानवीय एवं संतोषप्रद उत्तर दे सके। सच्चाई यह है कि वर्तमान समय में इस यातना का समाधान न होने के कारण वे दोनों विवाह विच्छेद कर अपने विवाह की तिलांजली दे देते हैं।

अतः यह भारतीय समाज की विडम्वना ही कही जायेगी कि आज भी जहाँ तलाक पुरुष के लिए एक सामान्य घटना होती है। वही स्त्री के लिए सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है तथा वह अपराध बोध की भावना से ग्रसित हो जाती है। इसलिए कोई भी स्त्री तलाक को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाती और अगर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो उसे पुनर्विवाह करके अपने अस्तित्व की रक्षा करनी पड़ती है।

(ग) विवाह विच्छेद की पीड़ा

सामाजिक एवं कानूनी रूप से पति-पत्नी के संबंधों का समाप्त हो जाना ही विवाह विच्छेद कहलाता है। यह पति पत्नी के वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में असामंजस्य एवं असफलता का सूचक है। विवाह विच्छेद हिन्दू समाज में स्त्री के लिए सामाजिक दृष्टि से सम्मानीय नहीं माना जाता। हमारे समाज में स्त्री के लिए पतिव्रत धर्म के पालन की बात कही गई है। अतः स्त्री-पुरुष को त्यागने की बात भी नहीं सोच सकती है। ऐसा करना उसके लिए सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से अनुचित माना जाता है। क्योंकि यहां विवाह को धार्मिक-अनुष्ठान माना गया है। भारतीय संस्कृति में विवाह को जन्म-जन्मांतर का संबंध माना जाने के कारण वैवाहिक जीवन को यथा संभव निर्वाह करने का प्रयास किया।

आधुनिक युग में आज विवाह की धारणा अखण्ड नहीं रही है। वैवाहिक जीवन के तनाव एवं कलह से मुक्ति पाने के लिए तलाक आम बात होती जा रही है, क्योंकि आधुनिक नारी व पुरुषों में जागरूकता अब पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ी है। कमजोर पड़ते वैवाहिक संबंधों को शहरीकरण, औद्योगिकीकरण तथा पाश्चात्यकरण की प्रक्रिया ने और भी झंझोड़ा है, परिणामतः तलाक का प्रचलन तेजी से बढ़ता जा रहा है। महानगरों में तो विवाह विच्छेद की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी ही रही है।

संयुक्त परिवारों के विघटन के साथ ही वैवाहिक जीवन में बिखराव आया है। अब दाम्पत्य जीवन का आदर्शवादी रूप विलुप्त हो रहा है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से स्त्री आधुनिक एवं महत्वाकांक्षी होने लगी है। उसने अपना पराबलम्बी रूप

त्यागकर स्वाभिमान पूर्वक स्वाभिलम्बी बनना सीख लिया है। वह पुरुष अनुगामीनी नहीं सहचरी बनने में गौरव अनुभव करने लगी है। इस सब के बावजूद भीतर से कहीं वह भारतीय संस्कारों से जुड़ी हुई भी है।

'आपका बंटी' उपन्यास में अजय से संबंध विच्छेद के बाद भी शकुन अपने को विवाह संबंध से मुक्त नहीं कर पाती। भारतीय नारी की यह विवशता है कि संबंध विच्छेद के बाद भी उसके मन में पति से जुड़े रहने की क्षीण सी उम्मीद बनी रहती है। यह उम्मीद तब तक बनी रहती है जब तक की कानूनी रूप से विवाह विच्छेद या तलाक नहीं हो जाता है। शकुन भी इस विवशता पूर्ण स्थिति में सात-साल व्यतीत कर देती है कि एक न एक दिन फिर से अजय से जुड़ जायेगी। उसका वैवाहिक जीवन फिर से सुखमय आरंभ हो जाएगा। वकील चाचा शकुन की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं- "यह संबंध ही ऐसा है लाख लड़-भिड़ लो, अलग रहने लगो, पर कहीं न कहीं आशा का एक तन्तु जुड़ा ही रह जाता है। वह आशा चाहे जिन्दगी भी पूरी न हो.....होती भी नहीं है.....फिर भी मन है कि इधर-उधर नहीं जाता, बस उसी में अटका रह जाता है।"

बंटी के प्रति अजय के स्नेह को देखकर वह उसे अपने प्रति आकर्षण का रूप मानती है। अजय बंटी के लिए खिलौने भेजता है तो उसे लगता है जैसे बंटी को माध्यम बनाकर उस तक भी कुछ भेजा गया है- अजय दिल्ली आकर घर पर न ठहरकर सरकिट हाउस में ठहरता है, उससे न मिलकर बंटी से मिलता है फिर भी उसे लगता है जैसे उससे न मिलकर भी अजय उससे मिला है। अजय के लौटने की उम्मीद उसे हमेशा रहती है। अजय के मिलकर बंटी जब वापस लौटता है तो बड़ी देर तक वह दुलारती-पुचकारती रहती है जैसे बंटी वहाँ से अकेला न लौटकर अजय को साथ लकर लौटा है। "बंटी से दिन भर अजय के साथ की गई गतिविधियाँ प्रसन्नता पूर्वक पूछती है। बंटी के प्रति अजय के स्नेह को देखकर शकुन को भ्रम होता है कि शायद वह उन दोनों के मध्य सेतु का काम करेगा- "न चाहते हुए भी आशा की एक हल्की सी किरण मन में कौंध गई। कौन जाने बंटी ही....।" इस विचार से ही उसके मन में बंटी के प्रति अतिरिक्त दुलार उमड़ता है और वह अपना सारा स्नेह बंटी पर उड़ेल देती है। अब बंटी उसके जीवन का केन्द्र बन जाता है। वह आपे जीवन में आए शून्य को बंटी के माध्यम से भरने का प्रयास करती है। बंटी जब उसकी टोड़ी के तिल पर अचानक उंगली रख देता है तो उसे अजय की याद ताजा हो जाती है। वह स्वयं ही बंटी की उंगली पकड़कर अपने तिल पर रख देती है, क्योंकि ऐसा करना उसे अच्छा लगता है। इस प्रकार उसके अवचेतन में गहरे जमें संस्कार उसे संबंध विच्छेद के बाद भी अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य

पुरुष के विषय में सोचने नहीं देते। वह परंपरागत भारतीय नारी की भांति अपने पति के लौटने की प्रतीक्षा करती है। वह वैयक्तिक स्वतंत्रता की भावना से युक्त होने के बावजूद परिवार एवं पति के प्रति अपनी निष्ठा में कमी नहीं दिखाती बल्कि हमेशा पति से जुड़ने की कोशिश करती रहती है।

जब अजय शकुन से तलाक की मांग करता है तो वह अंतर्मन से टूट जाती है। भीतर से टूटने के बाद भी वह बाहरी तौर पर बड़ी शांत और संयत बनी रहती है। वह कोर्ट जाकर इस संबंध को तोड़ आती है, लेकिन संबंध समाप्त करने के बाद भी उसे कहीं भी मुक्ति का एहसास नहीं होता। उसे लगता है एक अध्याय था जिसे समाप्त होना था और वह समाप्त हो गया। दस वर्ष तक यह विवाहित जीवन- "एक अंधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था। आज जैसे एकाएक वह उसके अन्तिम छोर पर आ गई। पर आ पहुंचने का संतोष भी तो नहीं है, ढकेल दिये जाने की विवश कचोट भर है। पर कैसा है यह छोर? न प्रकाश न खुलापन। न मुक्ति का अहसास। लगता है जैसे इस सुरंग ने एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़दिया है। फिर एक यात्रा वैसा ही अंधकार, वैसा ही अकेलापन।"

इस प्रकार शकुन अपने वैवाहिक जीवन से मुक्त होकर भी उसे कहीं मुक्ति का उल्लास नजर नहीं आता बल्कि वह अपने भीतर टूटन पाती है क्योंकि वह इस स्थिति के लिए तैयार नहीं होती। इसी कारण उसे अपना वैवाहिक जीवन के दस वर्ष अंधेरी सुरंग में जाने के समान लगते हैं। जहाँ न प्रकाश होता है न खुलापन। कोर्ट से लौटने के बाद विवाहित जीवन का क्षोभ उसे पूर्णतया ताड़े देता है। सारी कुण्ठित भावनाओं का प्रवाह अश्रुधारा में बह निकलता है। इसका वर्णन बंटी ने इस प्रकार किया- "एकाएक ममी फूट-फूटकर रो पड़ी तकिये में मुंह गड़ा दिया। सवेरे से जिस आवेग को रोक बैठी थी, अचानक ही जैसे सारे बांध तोड़कर बह निकला।"

इस भांति आधुनिक विचार सम्पन्न शकुन को तलाक वांछनीय नहीं हैं, क्योंकि भावात्मक रूप से वह परंपरागत भारतीय नारी है। पति से पुनः जुड़ने एवं दाम्पत्य संबंधों में माधुर्य की आशा में वह सात वर्ष बीता देती है। इसी कारण जब तलाक की अप्रत्याशित घटना से टूट जाती है। वस्तुतः स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज व्यक्तिगत रूप से जितना परिवर्तित हुआ है उतना मानसिक एवं संस्कारों के स्तर पर नहीं हो पाया। विशेषतः स्त्री के प्रति मानदण्ड में भी परिवर्तन नहीं आया है यही वजह है कि शकुन तलाक को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाती और अजय के फैसले से स्तब्ध हो जाती है। उसके सारे भ्रम टूट जाते हैं एवं उसे विश्वास हो जाता है कि अजय उसके बिना रह ही नहीं सकता बल्कि सुखी भी है तो उसे लगता है वह तो बेकार ही उम्मीद कर रही थी। अब तो सब समाप्त हो गया है। चुंकि भारतीय

समाज की रचना पुरुष प्रधान होने के कारण भारतीय नारी के दाम्पत्य जीवन का स्थायित्व और अस्थायित्व का आधार पुरुष की इच्छा होती है। वह सामाजिक एवं नैतिक रूप से स्वतंत्र रहता है। जबकि स्त्री आज भी परंपरागत मान्यताओं को तोड़ने का साहस बहुत कम कर पाती है। जहाँ तक संभव होता है वह विषम परिस्थितियों में भी निर्वाह करने की चेष्टा करती है।

(ग) संतान का त्रासद भविष्य

तलाक के उपरान्त संतान की स्थिति तब और कारूणिक एवं दारूण हो जाती है जब माता-पिता दोनों ही पुनर्विवाह कर अपनी जिंदगी की नयी शुरूआत कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चा न मां के पास 'एडजैस्ट' हो पाता है और न ही पिता के साथ। बच्चे के सहज एवं स्वाभाविक विकास में जितना उसका सामाजिक परिवेश सहायक होता है उतना ही उसके पारिवारिक परिवेश की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। बच्चे को सामन्य-असामान्य बनाने में उसके माता-पिता के आपसी संबंधों का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः व्यक्ति के सन्तुलित विकास के लिए उसके आचार-व्यवहार की सहजता, मन-मस्तिष्क की परिपक्वता और संश्लिष्ठता के लिए आवश्यक है कि उसे बचपन में सुखद एवं सामान्य स्थिति प्राप्त हो। उसे परिवार में वांछित सुरक्षित एवं स्नेहपूर्ण वातावरण मिले। यह सर्वमान्य है कि व्यक्ति के विकास क्रम में परिवार प्राथमिक पाठशाला है जहाँ उसके व्यक्तित्व निर्माण की नींव आरंभ होती है। यहीं पर वह सामाजिकता का पहला पाठ सीखता है।

मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति जो कुछ भी जीवन में अच्छा या बुरा, संतुलित अथवा असंतुलित एवं सामान्य या असामान्य बनाता है। उसमें परिवार की सुखद या दुखद स्थितियां बड़ी महत्वपूर्ण योग देती हैं। परिवार की दुखदइ सिथतियां उसके अवचेतन का हिस्सा बनकर कई मानसिक विकारों को जन्म देती है। फलतः बच्चा कई प्रकार की शंकाओं, कुण्ठाओं और संकोच से घिरकर मानसिक स्तर पर असामान्य एवं असंतुलित बन जाता है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चे को परिवार में सुखद एवं संतुलित वातावरण मिले।

'आपका बंटी' में बंटी की पारिवारिक स्थितियां सुखद एवं सामान्य नहीं हैं। उसके माता-पिता का संबंध विच्छेद हो चुका है। वह 7-8 वर्ष का तीव्र बुद्धि संपन्न प्रतिभाशाली एवं संवेदनशील बालक है। एकमात्र संतान होने के कारण वह मम्मी के स्नेह एवं प्रेम का केन्द्र है। वैसे पाप भी उसे अत्यंत प्यार करते हैं। लेकिन उसका बाल-सुलभ मन मम्मी-पापा के अलगाव के कारणों को खोजने की कोशिश करता है तो कभी मम्मी को प्रसन्न रखने का संकल्प करता है। मम्मी-पापा के संबंध कानूनी तौर पर खत्म होने के बाद मम्मी की व्यथा का अनुभव बंटी को असमय बड़ा बना

देता है- "मम्मी का रोना बंटी को एकदम बड़ा बना गया। मम्मी की पापा से लड़ाई हो गयी है, पक्की वाली।.....और मम्मी के एकमात्र सहारे, बंटी के ऊपर जैसे हजार-हजार जिम्मेदारियां आ गई, मम्मी को प्रसन्न रखने की। फिर वह पापा के दिये सभी खिलौनों को अलमारी में बंद कर देता है- पापा की तस्वीर भी। न ही पापा खुश। वह मम्मी को ही खुश करेगा। खुश नही सुखी करेगा। उसके सिवाय मम्मी का है ही कौन।" परन्तु जब उसे पता लगता है कि मम्मी उसे छोड़कर डॉ. जोशी से जुड़ रही है तो उसमें ईर्ष्या भाव जाग पड़ता है। वह मम्मी के प्रति अपने अधिकार भाव को डॉ. जोशी के सामने प्रकट करता है। मम्मी को वह नई किताबों पर कवर चढ़ाने के लिए आदेशात्मक भाव में कहता है 'मम्मी, अब अपना काम सुन लो।' लेकिन जब मम्मी कवर न चढ़ाकर डॉ. जोशी के साथ घूमने चली जाती है तो बंटी का गुस्सा और ईर्ष्या उबलने लगती है। "तुम्हें मेरी बिल्कुल परवाह नहीं रह गई है। मत करो मेरा कोई काम। बस डॉ. साहब के पास बैठकर चाय पीयो।"

मम्मी का डॉ. जोशी से पुनर्विवाह बंटी की मानसिकता को उत्तरोत्तर कारूणिक बनता है। डॉ. जोशी के दोनों बच्चों से बंटी 'एडजस्ट' नहीं हो पाता। घर पर उन दोनों का पूर्ण आधिपत्य है। अपने अधिकार भावना के कारण वे बंटी के प्रति प्रतिद्वन्द्विता का भाव रखते हैं। उनकी इसी भावना से बंटी स्वयं को डॉ. जोशी के घर में फालतू समझने लगता है। उसकी यह धारणा डॉ. जोशी की डिस्पेंशरी में लगे 'लाल तिकोन' का चिन्ह एवं उनके वाक्य 'इस देश में तो दो ही बच्चे होने चाहिए' और प्रबल हो जाती है। वह सोचन लगता है कि इस घर में अभि और ओत तो पहले से ही है, वह ही बाहर से आया है। इसलिए वह ही तीसरा फालतू बच्चा है। उसकी यह धारणा उत्तरोत्तर इतनी मजबूत होतीं जाती है कि वह हीनता बोध से ग्रसित होने लगता है। वह असहयोग पूर्ण व्यवहार करता है। वह हरदम मम्मी को रूलाने तड़पाने के उपाय सोचता रहता है। यह उधेड़बुन धीरे-धीरे उसे विक्षिप्त बनाती है। परिणाम स्वरूप वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। मम्मी की दूसरी शादी से उत्पन्न लापरवाही एवं उपेक्षा एवं पापा के स्नेह अभाव के कारण एक 'सामान्य बालक' से 'समस्या बालक' बन जाता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें तो पिता के प्यार से वंचित बंटी मां के समग्र प्यार की आकांक्षा में पजैसिव हो जाता है। उसकी सोच एवं क्रियाकलाप का केन्द्र उसकी मम्मी बन जाती है। मम्मी के साथ अकेले रहते वह इतना पजैसिव बन जाता है कि किसी अन्य पुरुष के साथ मम्मी को देखकर तिलमिला जाता है। बंटी की पजैसिवनेस, आक्रामकता, अहंवादिता, उदण्डता, असहयोग भावना और असुरक्षा भाव से उत्पन्न अपराध बोध व हीनताबोध उसकी मानसिक तनाव के द्योतक है।

पारिवारिक विघटन की त्रासदी भोगते बंटी का व्यक्तित्व खण्डित हो जाता है। अन्त में सामजंस्य न कर पाने की स्थिति में उसका जीवन एक 'प्रश्नचिन्ह' बनकर रह जाता है।

माता-पिता के तनावपूर्ण संबंधों में बंटी के सहज विकास को अवरूद्ध कर दिया। उसके स्वभाव में तीखापन आ जाता है। फलस्वरूप वह अपना तथा शकुन का जीवन दूभर कर देता है। वस्तुतः बच्चे के सहज स्वस्थ और संतुलित शारीरिक एवं मानसिक विकास में माता-पिता के सहयोग एवं प्रेम का संयुक्त योगदान होता है। मां की ममता उसको प्रफुल्लित करती है तो पिता का दुलार उसमें विश्वास पैदा करता है। मां उसकी भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है तो पिता का संरक्षण उसे सुरक्षा प्रदान करता है।

इस प्रकार बंटी की समस्या सामाजिक होने के साथ मनोवैज्ञानिक भी है। उसके माता-पिता के असहज संबंध उसे प्रतिभाशाली संवेदनशील बालक के स्थान पर मानसिक रूप से विक्षिप्त बना देते हैं। इस भांति वह समाज तथा स्वयं अपने लिए एक समस्या बन जाता है।